वर्ष : 1
अंक : 1
सितंबर 2011–अगस्त 2012
मूल्य : ₹100

ISSN : 2249-1198

दर्शन-ज्योति

रैफर्ड वार्षिक दार्शनिक शोध–पत्रिका
(Referred Annual Philosophical Research Journal)

मुख्य–संपादक
डॉ. आर.के. देसवाल

कार्यकारी–संपादक
योगाचार्य शीलक राम

कृष्ण योग आश्रम ट्रस्ट (पंजी.)
कुरुक्षेत्र–136119 (हरियाणा)

ISSN : 2249-1198

दर्शन-ज्योति

रैफर्ड वार्षिक दार्शनिक शोध-पत्रिका
(Referred Annual Philosophical Research Journal)

वर्ष : 1 अंक : 1 सितंबर 2011-अगस्त 2012

मुख्य-संपादक
डॉ. आर.के. देसवाल
(मो. 9466522694)
कार्यकारी-संपादक
योगाचार्य शीलक राम
(मो. 9813013065)
संपादन-सहयोग
डॉ. अनामिका गिरधर
(मो. 9416734334)
डॉ. एस.के. शर्मा
(मो. 9466241799)
डॉ. विजयपाल भटनागर
मो. 9416734334

शोध-पत्र भेजने हेतु पता:
डॉ. आर.के. देसवाल
अध्यक्ष, दर्शन-विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र-136119 (हरियाणा)
मो. 9466522694

सदस्यता शुल्क :
एक प्रति - ₹ 100

मुद्रण :
काकड़ोलिया ऑफसेट प्रिंटर्स,
रामगली, झज्जर रोड, रोहतक

लेजर टाईप सेटिंग :
बलवन्त सिंह
'क्विक-कॉरेक्ट कम्प्यूटर्ज'
रोहतक-124001

— संपादक विद्वत मंडल —

प्रो. हिम्मत सिंह सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष, दर्शन-विभाग, कु.वि. कुरुक्षेत्र

प्रो. सत्यपाल वर्मा
पूर्व अध्यक्ष, दर्शन-विभाग, कु.वि. कुरुक्षेत्र

प्रो. अरुण केशरवानी
अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास-विभाग, कु.वि. कुरुक्षेत्र

प्रो. भीम सिंह
अधिष्ठाता, प्राच्य विद्या-संकाय, कु.वि. कुरुक्षेत्र

प्रो. रणबीर सिंह
निदेशक, IS & IS, कु.वि. कुरुक्षेत्र

डॉ. सुरेंद्र मोहन मिश्र
संस्कृत-विभाग, कु.वि. कुरुक्षेत्र

© कृष्ण योग आश्रम ट्रस्ट (पंजी.)

-: प्रकाशक :-

डॉ. आर.के. देसवाल
कृष्ण योग आश्रम ट्रस्ट (पंजी.)
मकान नं. 1552, वार्ड-24,
अमर कॉलोनी, चनारथल,
नई अनाज मण्डी रोड, थानेसर
कुरुक्षेत्र-136119 (हरियाणा)
मो. 9466522694
e-mail : kyashram@gmail.com

स्वत्त्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. आर.के. देसवाल द्वारा काकड़ोलिया ऑफसेट प्रिंटर्स, रामगली, झज्जर रोड, रोहतक से मुद्रित करवाकर कृष्ण योग आश्रम ट्रस्ट (पंजी.) मकान नं. 1552, वार्ड-24, अमर कॉलोनी, चनारथल, नई अनाज मण्डी रोड, थानेसर, कुरुक्षेत्र-136119 (हरियाणा) से प्रकाशित। प्रकाशन तिथि : 15 सितंबर, 2011
मुख्य-सम्पादक : डॉ. आर.के. देसवाल ISSN : 2249-1198

1. शोध-पत्रिका में छपे शोध-पत्रों में प्रस्तुत दृष्टिकोण, सिद्धांत एवं विचारों से संपादक एवं प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस हेतु शोधार्थी स्वयं जिम्मेवार होंगे।
2. 'दर्शन-ज्योति' शोध-पत्रिका से संबंधित सभी पद अवैतनिक हैं।
3. 'दर्शन-ज्योति' शोध-पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल कुरुक्षेत्र न्यायालय के अधीन होंगे।

दर्शन-ज्योति
ऐकर्ड वार्षिक दार्शनिक शोध-पत्रिका
(Referred Annual Philosophical Research Journal)
ISSN : 2249-1198
वर्ष–1 अंक–1 (सितंबर 2011–अगस्त 2012) पृ.सं. 35–39

महर्षि वाल्मीकि का नैतिक-दर्शन

डॉ. देसराज सिरसवाल
असिसटेंट प्रोफेसर
दर्शन-विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय
सेक्टर-11, चण्डीगढ।

शोध-पत्र सार

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।
सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम ।। – भर्तृहरि

वास्तव में उन व्यक्तियों का पैदा होना ही सफल माना जाता है जो अपने सुकृत्यों द्वारा अपने वंश, समाज तथा राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाते हैं । ऐसे व्यक्ति इतिहास में "विभूति" की संज्ञा प्राप्त करते हैं ओर आने वाली संतति उनके कार्यों से शक्ति, स्फूर्ति ओर प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को सुखमय और सार्थक बनाती है । ऐसी ही विभूतियों में से एक नाम है – "महर्षि वाल्मीकि" । "रामायण" भारतीय-साहित्य में "आदि-काव्य" माना गया । प्रस्तुत शोध-लेख में महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत नैतिक-दर्शन का वर्णन किया गया है ।

मुख्य-शब्द : धर्म, परिवार, मानव, शिक्षा, जीवन-मूल्य, सदाचार।

नैतिकता धर्म का मूल है । धर्म मानव जीवन में प्रगति और प्रेरणा का स्त्रोत है । धर्म मानव-जीवन को सेवा-मार्ग दिखाता है और उसके अन्दर परोपकार की प्रवृत्ति पैदा करता है । किसी अत्याचारी का अनुकरण हम इसलिए नहीं करते है क्योंकि वह अनैतिक और धर्म-विरोधी है। धार्मिक व्यक्ति लोक उपकार और निःस्वार्थ चेष्टाओं से नैतिकता का पालने करते है और स्वेच्छा से कर्तव्य पालन तथा नैतिकता का आचरण करते है।[1]

धर्म की महत्ता को प्रकट करते हुए महर्षि कहते हैं कि संसार में धर्म ही सबसे श्रेष्ठ है और धर्म में ही सत्य की प्रतिष्ठा है । "धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्"[2]

महर्षि वाल्मीकि ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को रामायण का नायक बनाकर

वेदों में वर्णित सम्पूर्ण मूल्यों की स्थापना की है । यह भी सुविदित वास्तविकता है कि जब-जब वैदिक आदर्शो से कोई विरोधी दार्शनिक प्रवृत्ति टकराई है तब-तब वैदिक आदर्शो एवं जीवन-दर्शन के विकास एवं नये सुरताल एवं भाव भंगिमा के साथ संघर्ष की एक नयी जीवन-गाथा ही मानव जाति के सम्मुख प्रस्तुत हो गयी । परन्तु वैदिक-संस्कृति के प्राण और अधिक प्रबलता के साथ-सपन्दित हो गये । आदि-कवि का यह महाकाव्य इसी दार्शनिक-संघर्ष की पृष्ठभूमि को विस्तृत काव्य योजना के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करता है । इसमें धर्म, सत्य, दया, दान, मैत्री, शरणागतरक्षा और पुरुषार्थपूर्ण जीवन-दर्शन स्पष्ट रूप में उपस्थित होते है

प्राचीन जीवन-दर्शन को समझने की प्रबल आवश्यकता को इस तरह समझा जा सकता है, "वर्तमान काल में विज्ञान ने जहां मनुष्य को भौतिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अविष्कारों के ढेर लगा दिए है, वहां उसके जीवन में एक खोखलापन भी उत्पन्न कर दिया है । कला की चेतना, जीवन का लालित्य और सम्मान-बोध विज्ञान की अति-सुलभ सत्यापन विधि की परिधि से बाहर रह जाते है, क्योंकि गुणात्मक बोध को परिमाण की कसौटी पर परखा नहीं जा सकता । इसलिए एक शून्य सा निर्माण होता जा रहा है, जो मनुष्य के जीवन के उदात-पक्ष को समझने के लिए बाध्य कर रहा है।"[3] इसी उदात्त-पक्ष का वर्णन महर्षि वाल्मीकि ने जीवन्त रूप मं हमारे सामने उपस्थित किया है।

भारत की प्राचीन-संस्कृति और जीवन-मूल्य आज भी हमारे सामने न्यूनाधिक रूप से परिलक्षित होते है और दूसरी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति, राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन का जैसा सजीव वर्णन यहां पर मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। संस्कृत-साहित्य और भाषा हमारे भारतवर्ष की विश्वसाहि[illegible] [illegible] संस्कृति के प्रति एक अनुपम देन है, जिसकी किसी भी भांति उपेक्षा नहीं की जा सकती। विश्वकवि रविन्द्रनाथ टैगोर का भी यह मत था कि यह ग्रन्थ भारत की काव्य-कीर्ति को संसार से लुप्त नही होने देंगे। महर्षि वाल्मीकि धन्य है जिनकी परमोजस्वनी वाणी आज भी अपनी प्रवाहमान धाराओं से अनुपम शक्ति और शांति का संचार करती है । महर्षि वाल्मीकि द्वारा वर्णित कुछ नैतिक संप्रत्ययों को संक्षिप्त रूप से यहां वर्णित किया गया है ।

आदर्श परिवार की अवधारणा का वर्णन महर्षि वाल्मीकि ने विस्तृत ढंग से प्रस्तुत किया है । परिवार को समस्त मानवीय संगठनों की मूल इकाई

और सामाजिक विकास की पहली सीढ़ी माना जाता था । पिता परिवार का मुखिया था । अत: राम ने धनुर्भंग करने पर भी विवाह से पूर्व पिता की आज्ञा लेना अपना परम कर्त्तव्य समझा । महर्षि वाल्मीकि ने अति सुन्दर, मर्यादायुक्त, स्नेह से परिपूर्ण, देशभक्त, त्यागी और संस्कार-सम्पन्न परिवार का वर्णन किया है । किसी भी देश, समाज, जाति, परिवार का ताना-बाना सब परिवार पर टिका होता है । एक आदर्श-परिवार में सभी सदस्य आपस में प्रेम करते हों, सभी एक दूसरे के लिए त्याग की भावना रखते हों और परस्पर अटूट विश्वास रखते हों। वेद में भी आदर्श परिवार के विषय में बताया गया है कि परिवार में सद्भाव, समानता, प्रेम, त्याग, विश्वास, स्नेह और आदर-दृष्टि से प्रत्येक प्रसन्न और दीर्घायु हो सकते है ।[4] इन्हीं गुणों के कारण वाल्मीकि जी की परिवार की अवधारणा हजारों वर्षो के बाद भी आदर्श-परिवार की शिक्षा दे रही है ।

महर्षि वाल्मीकि एक आदर्श मानव के सभी नैतिक गुणों का वर्णन करते है जिससे कि व्यक्ति का व्यक्तिगत के साथ सामाजिक विकास भी हो और वह समाज और देश के लिए लाभकारी हो । वे कहते है "नरश्रेष्ठ ! परलोक पर विजय पाने की इच्छा रखने वाले मनुष्य को धार्मिक क्रूरता से रहित और गुरूजनों का आज्ञा पालक होना चाहिए ।"[5] कर्मयोगी व्यक्ति के गुणों का परिचय देते हुए उनका मत है, "जो अपने पुरुषार्थ से सदैव को दबाने में समर्थ है वह पुरुष दैव के द्वारा अपने कार्य में बाधा पड़ने पर खेद नहीं करता अर्थात् शिथिल होकर नहीं बैठता ।"[6] जीवन के हर संघर्ष का सामना करने की प्रेरणा देने के साथ-साथ महर्षि का मत है कि व्यक्ति को समदृष्टि को अपनाना चाहिए । वे कहते है, "धीर एवं प्रज्ञावान पुरुष को सभी अवस्थाओं में ये नाना प्रकार के शोक, विलाप तथा रोदन त्याग देने चाहिएं।"[7]

सत्य का आचरण करना सभी के लिए अति महत्वपूर्ण है । महर्षि वाल्मीकि ने इसका वर्णन करते हुए कहा है सत्य का पालन ही दया-प्रधान धर्म है, सनातन आचार है और सत्य में सम्पूर्ण लोक प्रतिष्ठित है ।

सत्यमेवेश्वरो लोके सत्ये धर्म:. सदाश्रित:
सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परमं पदम् ।।[8]

महर्षि वाल्मीकि कर्म मार्ग पर चलते हुए आदमी को सचेत करते हुए कहते है, "जो क्रियमाण कर्मो का फल का ज्ञान या विचार न करके केवल कर्म की ओर ही दौड़ता है, उसे उसका फल मिलने के समय उसी तरह

शोक होता है, जैसा कि आम काट कर पलाश सींचने वालों का होता है।''[9]

माता, पिता और गुरुजनों के महत्व को प्रकट करते हुए महर्षि उन्हें तीनों पुरुषार्थो की प्राप्ति का कारण मान रहे है । उनके अनुसार, ''जिनकी आराधना करने पर धर्म, अर्थ और काम तीनों प्राप्त होते है, तथा तीनों लोकों की आराधना सम्पन्न हो जाती है, उन माता, पिता और गुरु के समान दूसरा कोई पवित्र देवता इस भूतल पर नहीं है । इसलिए भूतल के निवासी इन तीनों देवताओं की आराधना करते है।''[10] आगे चलकर वह गुरुजनों की सेवा के महत्व को प्रकट करते है, ''गुरुजनों की सेवा का अनुसरण करने से स्वर्ग, धन-धान्य, पुत्र और सुख – कुछ भी दुर्लभ नहीं है।''[11]

स्त्रियों को समान अधिकार देने और उनकी प्रतिष्ठा को बनाये रखना अति महत्वपूर्ण है । महर्षि वाल्मीकि हमें यही उपदेश देते है कि समाज में स्त्री और पुरुष दोनों का बराबर महत्व है । उन्होंने वशिष्ट जी के मुख्य से कहलवाया है, ''सम्पूर्ण गृहस्थों की पत्नियां उनका आधा अंग है। इस तरह सीता देवी श्रीराम की आत्मा है, अत: उनकी जगह ये ही इस राज्य का पालन करंगी ।''[12] उपरोक्त वर्णित नीति-वचन महर्षि वाल्मीकि के विशाल चिन्तन का अंश मात्र है, और यह अपने आप में एक पूर्ण निधि है।

रामायण ने प्राय: विश्व के सभी महाद्वीपों में किसी न किसी रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है । भारत के अतिरिक्त श्रीलंका, नेपाल, चीन, तिब्बत, वर्मा, मलेशिया, कम्बोडिया, थाईलैंड, फिलीपिन्स, इन्डोनेशिया, लाओस, जापान इत्यादि देशों में रामायण के अपने स्वरूप विद्यमान है । जिनमें वहां की सभ्यता और रीति-रिवाजों का अनूठा संगम हुआ है । बहुत बार तो यह संगम इतना यथार्थ लगता है जैसे रामायण की विभिन्न घटनाएं इसी भूभाग में घटित हुई होंगी । थाइलैंड, बर्मा और कम्बोडिया के बौद्धों से लेकर, मलेशिया और इण्डोनेशिया के मुसलमानों तक में रामायण सांस्कृतिक प्रतिनिधि बनी, तो अमेरिका, यूरोप, सोवियत संघ, चीन, ब्रिटेन आदि देशों में यह साहित्यिक अभिरूचि का केन्द्र बन गई। जबकि फिजी, सूरीनाम, डच, गुयाना, मॉरिशस, ट्रिनिनाड आदि देशों में विस्थापित, वर्तमान में प्रवासी भारतीयों के लिए यह निरन्तर आध्यात्मिक संचेतना की धुरी बनी रही।[13] इसका एकमात्र कारण यह भी रहा कि इसका नैतिक चिन्तन प्राचीन समय से एक मार्गदर्शक का कार्य कर रहा है।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के पात्र राम, सीता, लक्ष्मण, भरत,

शत्रुघ्न, दशरथ, विश्वामित्र, जनक, हनुमान, रावण, विभीषण, कुम्भकर्ण, कैकेयी, मेघनाद, सुग्रीव, अंगद, मन्थरा, शूर्पणखां आदि का चरित्र समाज़ के प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है । प्रत्येक व्यक्ति इनमें से अपने लिए समुचित नीति और आचरण का चयन करके जीवन को सफल बना सकता है । स्वामी हो या सेवक, राजा हो या प्रजा, पुत्र और पिता, पति-पत्नि, शत्रु-मित्र, विद्वान् और साधारण मानव सभी प्रकार के मनुष्यों के लिए इसमें उचित सन्देश और कल्याणकारी नीति-दर्शन निहित है । केवल सामाजिक सदाचार ही नहीं, अपितु आध्यात्मिक-नीति, दार्शनिक-नीति, धार्मिक-नीति और राजनीति के भी ऐसे उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं जिनसे इस ग्रन्थ की सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती है। जीवन के किसी भी मोड़ पर निराश न होते हुए, अन्य व्यक्तियों को प्रेरणा देने के साथ-साथ स्वयं जीवन को सफलता की उचाईयों तक ले जाना ही महर्षि वाल्मीकि जी की शिक्षाओं का मुख्य संदेश है।

संदर्भ

1. डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, संस्कृति दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1990, पृ. 76
2. ''अयोध्या काण्ड'', श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, गीता प्रैस, गोरखपुर सर्ग 21, श्लोक 41
3. डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, संस्कृति दर्शन, पृ. 01
4. अल्का, ''वाल्मीकि जी का आदर्श परिवार'', गुरुकुल पत्रिका, 2006, पृ. 114
5. ''अयोध्या काण्ड'', श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, सर्ग 105, श्लोक 44
6. वही, सर्ग 23, श्लोक 17
7. वही, सर्ग 105, श्लोक 39
8. वही, सर्ग 109, श्लोक 13
9. वही, सर्ग 63, श्लोक 09
10. वही, सर्ग 30, श्लोक 34
11. वही, सर्ग 30, श्लोक 36
12. वही, सर्ग 34, श्लोक 24
13. राजेन्द्र, ''अथातो रामायण जिज्ञासा'' गुरुकुल पत्रिका, 2006, पृ. 166